क. यशायाह, यिर्मयाह, दानिय्येल और कूस्रू।

- **७० साल का अंत।**
  - परमेश्वर ने कुस्रू के उस फरमान के विष्य, जिसका एज्रा द्वारा उल्लेख किया, घोषणा करने से १५० साल पहले बता दिया था। इतिहास हमेशा परमेश्वर के नियंत्रण में है।
  - दानिय्येल ने परमेश्वर के समक्ष इस्राएल के लिए मध्यस्थता की (दानिय्येल ९:१-१९) और कुस्रू को यशायाह और यिर्मयाह की भविष्यवाणियों के बारे में बताया। कुस्रू द्वारा निर्वासित लोगों की वापसी की अनुमति देने के लिए यह महत्वपूर्ण बात थी।

ख. जरुब्बाबेल और फारसी राजा।

- **निर्वासित लोगों की वापसी।**
  - सितंबर ५३७ ईसा पूर्व कुस्रू एक्बाटाना में था। यहीं उसने एज्रा ६:२-५ में लिखा हुक्म जारी किया। इस हुक्म में निम्नलिखित बातें शामिल थी:
    (1) उन्हें यरूशलेम में मंदिर का निर्माण करना था
    (2) हर यहूदी लौट सकता था (यह अनिवार्य नहीं था)
    (3) उनकी चांदी, सोना, मवेशी...से मदद की जा सकती थी
  - एज्रा २:१ के अनुसार, उनका नेतृत्व जरूब्बाबेल (राजा यकोन्याह के पोते) और उच्च पुरोहित येशू/ यहोशू ने किया था।
- **फारस के राजा।**
  - हम एज्रा और नहेमायाह की किताबों में बताई गई कहानी को बेहतर ढंग से समझेंगे, अगर हम इस्राएलियों पर शासन करने वाले फ़ारसी राजाओं के साथ उनके संबंध को जान लें।
    (1) कुस्रू,द्वितीय महान ५५९-५३० ई.पू.: ५३६ ई.पू. पहला समूह ज़ेरूबबेल के साथ स्वदेश आया: [मंदिर का पुनर्निर्माण शुरू]
    (2) दारा प्रथम ५२२-४८६ ई.पू.: मार्च ५१५ ई.पू. मंदिर समाप्त और समर्पित
    (3) अर्तक्षत्र प्रथम ४६५-४२५ ई.पू.: ४५७ ई.पू. एज्रा दूसरे समूह के साथ यरूशलेम लौटता है [दानिय्येल ९ के ७० सप्ताह शुरू होते हैं] ४४४ ई.पू. नहेमायाह तीसरे समूह के साथ लौटा [यरूशलेम की दीवार को फिर से बनाया गया]

ग. एज्रा और अर्तक्षत्र।

- **दूसरी वापसी।**
  - ४५७ ई.पू. में अर्तक्षत्र के निर्णय में (एज्रा ७:१२-२६) दो मुख्य बातें शामिल हैं:
    (1) मंदिर: पुजारियों और लेवियों का उल्लेख किया गया है। उन्हें करों में छूट दी गई (पद्य १३, २४); इसकी बहाली के लिए एक विशेष दान का अनुरोध किया जाता है। बलिदानों के लिए एक वार्षिक जिम्मेदारी स्थापित की गई (पद्य १५-२३)
    (2) यहूदा की स्वायत्तता: एज्रा को न्यायाधीशों और राज्यपालों की नियुक्ति की अनुमति दी गई। उन्हें अपने स्वयं के कानून बनाने की अनुमति दी गई (पद्य २५-२६)
  - इस दूसरी वापसी में १२ कुलों में लगभग १,५०० परिवार के नेता शामिल थे (एज्रा ८)।
- **एज्रा।**
  - उसने बाइबल की एस्तेर, एज्रा और १ और २ इतिहास की किताबें लिखीं। उसने भजनों का संकलन भी किया और शास्त्रों तथा मूसा की व्यवस्था की गहरी समझ थी।
  - यहूदी परंपरा का कहना है कि उसने सभा स्थानों में सभाएं शुरू कीं और इब्रानी पूजा और लेखन प्रणालियों में अन्य सुधार किये।
  - एज्रा एक उदाहरण है कि परमेश्वर क्या कर सकता है जब हम उसे अपने अंदर काम करने दें और उन उपहारों को विकसित करें जो उसने हमें दिए हैं।

फारस के राजा

- **कुस्रू,द्वितीय महान ५५९-५३० ई.पू.** — ५३६ ई.पू. पहला समूह ज़ेरूबबेल के साथ स्वदेश आया — मंदिर का पुनर्निर्माण शुरू हुआ
- **कैंबिस द्वितीय ५३०-५२२ ई.पू.**
- **गौमाता (झूठी सार्मदिस) ५२२ ई.पू.**
- **दारा प्रथम ५२२-४८६ ई.पू.** — मार्च ५१५ ई.पू. मंदिर समाप्त और समर्पित हुआ
- **अर्तक्षत्र प्रथम (क्षयर्ष) ४८६-४६५ ई.पू.** — एस्तेर रानी बन जाती है — यरूशलेम का पुनर्निर्माण रुकता है
- **अर्तक्षत्र प्रथम ४६५-४२५ ई.पू.**
  - ४५७ ई.पू. एज्रा दूसरे समूह के साथ यरूशलेम लौटता है — दानिय्येल ९ के ७० सप्ताह शुरू होते हैं
  - ४४४ ई.पू. नहेमायाह तीसरे समूह के साथ लौटा — यरूशलेम की दीवार को फिर से बनाया गया